दिनांक :- 22-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय वर्ष (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

सेमेस्टर :- सात

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- चीन गणतंत्र की दशाब्दी (गणतंत्र का छायावास)

युवान शी-काई बनाम संसद →

1913 ई० में संसद पुनः बुलाई गई। इस समय इसके दोनों सदनों में अतिवादी दल का नियंत्रण था। अगस्त 1912 ई० में तुंग मेंगहुई ने अपना पुनर्गठन कर लिया था। अनेक दलों को मिलाकर कुओ मिंतांग (राष्ट्रीयवादी लोकतांत्रिक दल) का गठन कर लिया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य चुनाव में राष्ट्रपति का प्रभावकारी

ढंग से मुकाबला करना था। युवान शी-काई को कड़ा मुकाबला करना पड़ा। किंतु इसके पुनर्गठन और चुनाव मे विजय के बाद भी यह राष्ट्रपति की निती का सफलता पूर्वक विरोध नही कर सका। संसद मे युवान शक्तिशाली व्यक्ति के रूप मे उभर चुका था। वह ऋण प्राप्त कर अपना शक्ति संचय करने लगा। संसद उसका बारबार विरोध करती रही। प्रांतो मे भी यूवान ने अपना प्रभाव बढ़ा लिया। उसने सभी जगह अपने समर्थको को बहाल किया राजनीतिक हत्याएं भी की गई। इनमें मार्च 1913ई० मे शंघाई मे कुओमिंतांग नेता सुंग चीआओ-तेन की हत्या उल्लेखनीय है। जिसके लिए यूवान स्वंय उत्तरदायी था। पीकिंग मे राष्ट्रपति च्यांग के विरुद्ध विपक्ष की भूमिका नगण्य हो गई। अतएव, वे पुनः क्रांतिकारी और उग्र हो गए। 1913 ई० मे यांगत्सी घाटी मे ग्रीष्म क्रांति

(Summer Revolution) के दामन से क्रांतिकारियों की कमजोर तथा राष्ट्रीय प्रति ने सामरिक क्षेत्रों में अतिरिक्त सेना भेजकर अपने विरोधी नेताओं को देश से निकाल बाहर किया। उसने कुओमिंतिंग को इस आधार पर भंग कर दिया कि इसके कुछ नेताओं ने विद्रोह में भाग लिया था तथा यह एक राजद्रोही संगठन हो गया था।

नानकिंग के औपबंधिक संविधान के स्थान पर देश में एक संविधान निर्माण का काम हाथ में लिया गया। यह काम संसद के दोनों सदनों के सदस्यों की एक बड़ी समिति ने किया। समिति की बैठक स्वर्ग मंदिर (Temple of Heaven) में होती थी। युवान निर्वाचन द्वारा स्थायी राष्ट्रपति बनने में दिलचस्पी लेता था। इसके लिए उसने संसद से न केवल अनुरोध ही किया बल्कि इसे रिश्वत भी दी तथा बहलाया-फुसलाया भी। पुनः उसने क्रांति उत्सव मनाने तथा शक्तियों से चीनी गणतंत्र की मान्यता

प्राप्त करने का भी प्रयास किया। संयुक्त राज्य अमरीका ने मान्यता प्रदान कर दी थी। इगलैंड तिब्बत प्रश्न के संतोषजनक समाधान के बाद मान्यता देने के पक्ष में था। युवान को स्थायी राष्ट्रपति के रूप में निर्वाचन हुआ। वह 10 अक्टूबर 1913 ई० को विधिवत स्थायी राष्ट्रपति मान लिया गया। इससे उसकी स्थिति और भी मजबूत हो गई। संविधान निर्मात्री समिति ने 26 अक्टूबर 1913 ई० को संविधान को पारित कर दिया। किंतु संसद के द्वारा इसे स्वीकृति मिलने के पूर्व ही संविधान निर्मात्री समिति का कार्य काल समाप्त हो गया। अधिकारियों ने राष्ट्रपति द्वारा उनके साने पर दस्तावेज की शर्तों का विरोध किया। पनवम्बर 1913 ई० को युवान ने अपने मंत्रिमंडल की सहमति पर कुओमिंतांग को एक राजद्रोही संगठन कर भंग कर दिया। इस के साथ ही संसद भी भंग हो गई।

10 जनवरी 1949 ई० को राष्ट्रपति के फरमादेश से यह अनिश्चित काल के लिए स्थगित करदी गई। इस तरह चीन में संसदीय व्यवस्था का अंत हो गया यद्यपि राष्ट्रपति ने इसके शव को एक वर्ष के लिए सावधानीपूर्वक संभाल कर रखा।

संसद के भंग करने पर लोगों ने कोई आवाज नहीं उठाई। इसमें अनुभवहीन युवक थे जिन्हें पुरातन व्यवस्था तथा इसके अधिकारियों से घोर घृणा थी। किंतु वे एक संतोषजनक संसदीय व्यवस्था स्थापित करने में असफल रहे। युवान शी-काई यही चाहता था। साथ ही पश्चिमी लोकतांत्रिक देश भी चीन में गणतंत्र को सफलता नहीं चाहते थे। उनके नागरिक चीन में थे जिनके वहाँ सांपत्तिक हित थे। वे वहाँ कोई लुंज-पुंज गणतंत्र की जगह शक्तिशाली तानाशाह चाहते थे। वे वहाँ युवान भी यही चाहता था। अतएव चीन में संसदीय व्यवस्था लड़खड़ा गई।

राष्ट्रपति की तानाशाही —

संसद के भंग होने के बाद राष्ट्रपति युवान शी-काई ने देश

को अपने ढंग का गणतंत्रीय शासन दिया। यह गणतंत्र का भूत था या छायाभास था। गणतंत्र की छाया में युवान शी-काई की तानाशाही सामने आई। चीन जहाँ निरक्षरता का साम्राज्य व्याप्त था तथा जहाँ के लोग एक व्यक्ति के शासन से परिचित थे, युवान ने अपने को वहाँ एक मिशाल के रूप में पेश किया। उसने संसद के भंग होते ही जनवरी 1914 ई० में अपने समर्थकों की एक राजनीतिक परिषद् (Political council) गठित की। इसके परामर्श पर एक संवैधानिक परिषद् (consitutional compact) का गठन किया। इसकी प्रथम बैठक 18 मार्च 1914 ई० को हुई। उसका मुख्य काम नानकिंग संविधान का पुनर्संशोधन करना था जिससे नई व्यवस्था को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया जा सके। इसने संवैधानिक समझौता (consitutional combpact) द्वारा इसे पूरा किया।

यह चीन का दूसरा लोकतांत्रिक औपबंधिक संविधान था। समझौता के तहत सभी अधिकार राष्ट्रपति को दिए गए जिसका निर्वाचन दस वर्ष के लिए होना था, वह इस कार्य काल को बढ़ा भी सकता था या इस बीच अपने उत्तराधिकारी का नाम दे सकता था। मंत्रिमंडल के स्थान पर राज्य सचिव (Secretary of State) को रखा गया। यह अध्यक्षीय निर्वाचन सन्नियम (Presidential Election Law) के तहत था। जिसकी नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा होती थी तथा वह उसके प्रति ही उत्तरदायी था। संसद को केवल परामर्श देने का अधिकार दिया गया। लेकिन संसद का कभी गठन ही नहीं किया गया। राज्य परिषद (Council of State) एक परामर्शदात्री संस्था थी और इसे ली फा युवान (Li Fa Yuan) या संसद के गठन तक काम करना था। इसकी अनुशंसा पर ही भविष्य में संवैधानिक परिवर्तन किए जा सकते थे।